"संस्कार जागृति मिशन" को समर्पित

!! ओ३म् !!

अंक-10 वर्ष-01, फरवरी 2020 (मासिक)

एक कदम संस्कारों की ओर

संस्कार जागृति

मासिक डिजीटल (ऑन लाइन) पत्रिका

सभी देशवासियों को "ऋषि बोध दिवस" की हार्दिक शुभकामनाएं

संस्कार जागृति

''संस्काराद् द्विज उच्यते''

(संस्कारों से परिष्कृत मनुष्य ही द्विज कहलाते हैं)

(भारतीय संस्कृति व संस्कारों को पुनः जागृत करने में अहम भूमिका निभा रही संस्था 'संस्कार जागृति मिशन' को समर्पित डिजीटल पत्रिका)

अंक-10 वर्ष-01, संवत्सर 2076 फरवरी 2020 (मासिक)

मार्गदर्शक
आचार्य सत्यप्रिय आर्य
डा0 अर्चना प्रिय आर्य

संपादक
विवेक प्रिय आर्य

सृष्टि संवत्
1960853120

कार्यालय
संस्कार जागृति मिशन
52, ताराधाम कॉलोनी
नियर पुष्पांजलि द्वारिका
टाउनशिप (मथुरा) उ.प्र.

दूरभाष
09719910557
09719601088
09058860992

अनुक्रमणिका

लेख-कविता	पृष्ठ संख्या
वेदवाणी	03
सम्पादकीय	04
संस्कारों की विज्ञान सम्मत प्रक्रिया	05
कवि की कलम से	06
परमात्मा को सदाचार ही सबसे प्रिय है	07
आलस्य छोड़ो, ऊंचाई छूओ	08
स्वास्थ्य चर्चा	09
संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां	10-15
विज्ञापन	16

'संस्कार जागृति' पत्रिका प्राप्त करने के लिए

अपनी ई-मेल आईडी व व्हाट्सएप नम्बर हमें भेजें........09719910557

वेद वाणी

मन की अपार शक्ति को चैतन्य कर

वेद मंत्र

ओ३म् आ त एतु मनः पुनः क्रत्वे दक्षाय जीवसे। ज्योक् च सूर्यं दृशे।।

-ऋ० १०। ५७। ४

ऋषिः-**बन्धुःसुबन्धुः**।। देवता-**विश्वेदेवाः**।। छन्दः-**निचृद्गायत्री**।।

विनय

हे मनुष्य! जो तू इतना निर्बल, हतोत्साह और शिथिल हो गया है, इसका कारण तेरे मन की निर्जीवता है। तेरा मन निर्जीव हो गया है, मानो तुझमें मन रहा ही नहीं है। तेरे रोग का और कोई कारण नहीं है। तू अपनी इस मन्दता को-निर्बलता को दूर करने के लिए यों ही अप्राकृतिक दवाएं खाता फिरता है, इनसे कुछ नहीं बनेगा। ''वहम का इलाज लुकमान के पास भी नहीं है।'' वहम को छोड़कर अपने अन्दर तनिक उस जगद् व्यापक मन की धारा को प्रविष्ट होने दो जो सब संसार में व्यापक है और सब संसार को चला रही है-प्रत्येक मनुष्य के मन को हिला रही है। उस मनोमय धारा को तू जितना अपने अन्दर ग्रहण करेगा उतना तेरा मन सजीव होता जाएगा। तब तू फिर से ठीक तरह 'क्रतु'-कर्म कर सकेगा। तेरे अन्दर 'दक्ष'-बल आ जाएगा और तुझमें एक नये जीवन का संचार हो जाएगा तथा जगत् को प्राण देनेवाले जो सूर्यदेव हैं उनका दर्शन करता हुआ-उनसे प्राण लेता हुआ तू दीर्घ आयु तक जीवित रहेगा। यह सब मनःशक्ति के प्रवेश का चमत्कार है, अतः हमारी तो परमात्मा से यही प्रार्थना है कि तुझमें मनःशक्ति का प्रवेश हो। इसी में तेरा कल्याण है। मनःशक्ति के बिना तो अन्य किसी भी उपचार से लाभ नहीं उठाया जा सकता, अतः मन ही को बढ़ा, मन ही को जगा, मन ही को चैतन्य कर।

शब्दार्थ

मनः- मन को **ते**- तुझमें **पुनः**- फिर **आ एतु**- प्रवेश हो जाए, जिसमें कि तू **क्रत्वे**- कर्म करने लगे **दक्षाय**- तुझमें बल आ जाए **जीवसे**- जीवन आ जाए **ज्योक् च**- और तू चिरंजीवी होता हुआ **सूर्यं दृशे**- निरन्तर सूर्यदर्शन करता रहे।

('आचार्य अभयदेव जी' की पुस्तक 'वैदिक विनय' से)

आपके विचार व सुझाव आमंत्रित हैं

प्रिय साथियों आप भी अपने सुझाव, विचार, लेख, कविता, स्वास्थ्य चर्चा आदि हमें भेज सकते हैं, जिन्हें हम अपने अगले अंक में प्रकाशित कर सकें।

E-Mail : sanskarjagratimission@gmail.com 09719910557

सम्पादकीय

महर्षि दयानंद के बोध दिवस पर विशेष

विवेक प्रिय आर्य
(सम्पादक)

गुजरात प्रांत के टंकारा ग्राम में बालक मूलशंकर भगवान शिव के दर्शन की जिज्ञासा को लेकर, व्रत उपवास को धारण कर, महाशिवरात्रि के दिन शिव मंदिर में रात्रि जागरण करते हुए आँख और अंत:करण से जागते रहे। देर रात तक मंदिर में शिव दर्शन की अभिलाषा के लिए आये हुए अन्य सभी भक्त जन तो सो गए लेकिन बालक मूलशंकर नींद आने पर भी आंखों पर जल के छींटे मार मार कर भगवान शिव के दर्शन के अवसर को ढूंढता रहा। आंखें तो शिव दर्शन को लालायित थीं, लेकिन अचानक उस बालक मूलशंकर को भगवान शिव की मूर्ति पर रखे हुए भोग प्रसाद को खाते व उटपटांग करते हुए चूहों के दर्शन हो गए। बालक मूलशंकर को इसी दृश्य ने झकझोर कर रख दिया। उस बालक ने सोचा कि पिताजी कहते हैं कि समस्त संसार का कल्याण और रक्षा करने वाले भगवान शिव हैं, तो इन तुच्छ चूहों से वह जब अपनी रक्षा नहीं कर सकते तो इस ब्रह्मांड की रक्षा और

कल्याण कैसे करते होंगे? हो न हो यह सच्चे भगवान शिव नहीं हो सकते। शायद वह शिव तो और कोई ही है। मुझे तो उस सच्चे शिव के ही दर्शन करने हैं, जो प्राणी मात्र का कल्याण करता है, जिससे मैं वार्तालाप कर सकूं, जो मेरे भेंट फल, मिठाई, प्रसाद को स्वीकार कर खा सके, जो दूध आदि पेय पदार्थों को पी कर व्यर्थ न जाने दे, जो प्रत्यक्ष रूप में मुझे दर्शन देकर मेरा उद्धार कर सके। इसी विचित्र घटना और अदभुत सोच ने, सच्चे शिव के दर्शन करने की प्यास ने, ब्राह्मण बालक मूलशंकर को बचपन में ही घर छोड़ने को विवश कर दिया। इसी जिज्ञासा को लेकर वह घर छोड़कर सच्चे शिव की खोज में निकल पड़ा। अनेक पंडों पुजारियों, मंदिरों में भटकते-भटकते उस बालक ने कैलाश पर्वत तक की यात्रा कर दी और आगे चलकर वह सच्चे सर्वरक्षक, निराकार परमेश्वर जिसका एक नाम 'शिव' भी है, उस सर्वव्यापी का अपने अंत:करण के मन मंदिर में अनुभव दर्शन कर महर्षि दयानंद सरस्वती के नाम से जग प्रसिद्ध हुए। आज शिवरात्रि के पावन पर्व पर देश के करोड़ों लोग भगवान शिव के दर्शन करने दूध के लोटे भर-भर कर, फल, मिठाई, प्रसाद लेकर मंदिरों में पहुंचेंगे, हो सकता है वह समस्त भेंट पंडेपुजारी और चूहे खा जाएं, नालियों के भेंट चढ़ जाए। भगवान शिव तो सभी को खिलाने वाले हैं, वह तो स्वयं इस को खाएंगे नहीं, भले देश के करोड़ों बच्चे भूखे रह जाएं। वास्तव में न तो भोग का सदुपयोग होगा और न ही वास्तविक शिव के दर्शन होंगे। क्योंकि बालक मूलशंकर के दिव्य आंखों और विचारों से उस सच्चे सर्वरक्षक, सर्वव्यापी, अंतर्यामी, कल्याणकारी शिव के दर्शन करने और ढूंढने की जिज्ञासा तो शायद किन्हीं विरले भक्तों में ही मिलेगी।

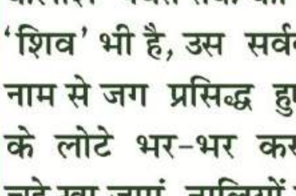

महर्षि दयानंद सरस्वती जी के बोध दिवस व महाशिवरात्रि की हार्दिक शुभकामनाएं

संस्कार जागृति मिशन
एक कदम संस्कारों की ओर

''संस्कारों की विज्ञान सम्मत प्रक्रिया''

लेखिका : डा. अर्चना प्रिय आर्य, अध्यक्ष : संस्कार जागृति मिशन

डा० अर्चना प्रिय आर्य
एम.ए. (संस्कृत/हिंदी)
बी.एड., पीएच.डी.

बालक के गर्भ में प्रवेश करने से लेकर जीवन यापन की विविध परिस्थितियों में से गुजरते हुए शरीर छोडने तक विविध अवसरों पर संस्कारों का आयोजन करने तक विविध अवसरों पर संस्कारों का आयोजन करने का हमारे धर्म शास्त्रों में विधान है। इन विधानों से व्यक्ति की अन्तःचेतना पर एक विशेष प्रभाव पडता है और उसका सुसंस्कारी बन सकना सरल हो जाता है। विशिष्ट प्रयोजनों के लिए उपयुक्त विशिष्ट शक्ति सम्पन्न वेद मन्त्रों में अपनी विशिष्ट क्षमता होती है। उनका निर्माण ऐसी वैज्ञानिक पद्धति से हुआ है कि विधिवत सस्वर उच्चारण किये जाने पर वे आकाश तत्व में एक विशिष्ट विद्युत प्रवाह तरंगति करते हैं। उनका प्रयोजन पर वैसा ही प्रभाव पडता है जैसा उस मन्त्र का उद्देश्य है।

मन्त्रों की शक्ति प्रसिद्ध है। फिर वेद मन्त्रों की शक्ति का तो क्या कहना शब्द शास्त्र के सूक्ष्मदर्शी वैज्ञानिकों ने अगणित प्रयोग परीक्षणों से पूर्व काल में यह पता चलाया था कि किन शब्दों का किन-किन शब्दों के साथ तालमेल बिठाया जाए तो उससे किस प्रकार का प्रवाह निःसृत होगा और उसका सुनने वालों पर अथवा जिनके निमित्त उनका उच्चारण किया जा रहा है, उन पर क्या प्रभाव होगा? इसी निष्कर्ष के आधार पर वेद मन्त्र बने हैं और उनमें से किसका किस प्रयोजन के लिए किस प्रकार प्रयोग किया जाए इसका निर्धारण गृह्सूत्रों एवं कर्मकाण्ड प्रयोजन के लिए विनिर्मित धर्मग्रन्थों में हुआ है। यज्ञ उपचार के साथ-साथ इन मन्त्रों की शक्ति और भी बढ जाती है। जो लोग आहुतियां देते हैं उन पर इन मन्त्रों का सीधा प्रभाव पडता है। जिस प्रकार बिजली भाप, अणु, रसायन पदार्थ, विद्या आदि का अपना विज्ञान है, उसी प्रकार मंत्र शास्त्र एवं यज्ञादि कर्मकाण्डों का भी अपना विज्ञान है। यदि कोई उसका प्रयोग ठीक प्रकार से कर सके तो मनुष्य के ऊपर उसका असाधारण प्रभाव पड सकता है और उस प्रभाव का असाधारण लाभ उठाया जा सकता है। व्यक्ति को सुसंस्कृत बनाने में संस्कार पद्धति का क्रियाकलाप इतना अधिक सफल हो सकता है कि उससे आज भी आश्चर्यचकित हुआ जा सकता है।

स्वामी विवेकानन्द जी ने कहा था कि पाश्चात्य मनोविज्ञान ने हमें पशु प्रवृत्तियों का गुलाम बनाकर स्वच्छन्द जीवन जीने, अनैतिक आचरण करने के लिए खुली छूट दे दी किन्तु इस पर अंकुश लगाने व जीवन को सही ढंग से जीने का शिक्षण किस विधा ने दिया यह मुझ से पूछा जाये तो मेरा इशारा भारत की ओर होगा। जिसके प्राच्य मनोवैज्ञानियों ने मानव मात्र के लिए कर्म प्रारब्ध संस्कार, मन बुद्धि चित्त अहंकार रुपी अन्तःकरण चतुष्टय की व्याख्या कर विश्व मानवता की सबसे बडी सेवा की। भारतीय संस्कृति का यह सबसे प्रबलतम पक्ष है व यह समग्र आर्ष वांगमय में वेदों से लेकर उपनिषदों व दर्शनों से लेकर गीता तक मुखरित हुआ है। संस्कार शब्द की अवधारणा ही मूलरुप से भारतीय संस्कृति की है जो आत्मा की नखरता व जीवन के साहित्य अखण्ड रुप पर विश्वास करती है। आस्तिकता का यह मूल प्राण है। आस्तिकता का यह मूल प्राण है। योग वशिष्ठ सौ टके की बात कहता है -

अतस्त्वं मन एवेदं नरं विद्धि न देहकम्। जडो देहो मनश्चात्र न जडं नाजदं विदुः।।

भाव यह है कि मन ही मनुष्य देह मनुष्य नहीं है। देह तो यह जड है। परन्तु मन न जड है, चेतन। यह अभयात्मक है। जड चेतन के बीच दुभाषिये का काम करता है। चेतन से चेतना लेकर जड को चेतनामय बनाता है। वस्तुतः यह सारी सृष्टि ही मन द्वारा रची गयी है। समष्टि मन परमात्मा का मन है ऐसी भारतीय संस्कृति की मान्यता है।

.........................(शेष अगले अंक में)

कवि की कलम से

वह आजाद हमारा था...

रचियता : कवि रोहित आर्य (अलीगढ़)

सुन करके जिसकी दहाड़ को, कापा लंदन सारा था,
वह आजाद हमारा था, भारत माँ का प्यारा था,
जिसकी पिस्टल ने गोरो को, मौत के घाट उतारा था,
वह आजाद हमारा था, भारत माँ का प्यारा था।।0।।

देकर के बलिदान यहाँ वो, कर गया दूर अधेंर था,
सीताराम तिवारी और, माँ जगरानी का शेर था,
उसने अपने लोहू से, माओं का कर्ज उतारा था।।1।।
वह आजाद हमारा था.....

पन्द्रह वर्ष की आयु में जब, पीठ पै लाठी खाई थी,
जीवन भर न पकड़े जाने, की तब कसम उठाई थी,
मरते दम तक अपने व्रत को, निज जीवन में धारा था।।2।।
वह आजाद हमारा था.....

उड़ती चिड़िया मार गिराता, ऐसा गजब निशाना था,
जिस पर पिस्टल तानी उसका, निश्चित ही मर जाना था,
जान की भीख माँगने लगता, हर गोरा बेचारा था।।3।।
वह आजाद हमारा था.....

करी घोषणा गोरों ने, आजाद को जो भी लायेगा,
सुन लो पाँच हजार रूपये का, पुरस्कार वो पायेगा,
गोरों का अभिमान रखा, उसने ठोकर पर सारा था।।4।।
वह आजाद हमारा था.....

उसकी दहशत इतनी थी, गोरे थर-थर-थर्राये थे,
झुण्ड बनाकर गीदड़ सारे, उसे मारने आये थे,
किन्तु अकेले शेर बब्बर से, गोरों का दल हारा था।।5।।
वह आजाद हमारा था.....

लड़ता रहा अन्त तक अपना, शेर बब्बर उन गोरों से,
भारत माँ को लूट रहे थे, सभी फिरंगी चोरों से।
चली दनादन गोली लेकिन, वह हरदम हुँकारा था।।6।।
वह आजाद हमारा था.....

हुई गोलियाँ खत्म और, उसने फिर घोर निनाद किया,
मरने तक आजाद रहुँगा, अपने व्रत को याद किया।
अन्तिम गोली निज मस्तक पर, मारी स्वर्ग सिधारा था।।7।।
वह आजाद हमारा था.....

उसकी दहशत का आलम, कायर गोरों पर छाया था,
मरने के पश्चात भी कोई, गोरा पास न आया था।
पैर में गोली मार के उसके, मरने को स्वीकारा था।।8।।
वह आजाद हमारा था.....

लाल रक्त बहता जाता था, श्वेत जनेऊ पहना था,
हरी घास पर लेट गया वह, भारत माँ का गहना था,
निज लोहू से ही फहराया, सुनो तिरंगा प्यारा था।।9।।
वह आजाद हमारा था.....

मार झपट्टा लाश बिछा देने, वाला वह बाज लगा,
हर एक गोरे को उस दिन, आजाद मेरा यमराज लगा।
'रोहित' उस आजाद से काँपा, हर गोरा हत्यारा था।।10।।
वह आजाद हमारा था.....

''परमात्मा को सदाचार ही सबसे प्रिय है''

लेखक : आचार्य सत्यप्रिय आर्य, संरक्षक : संस्कार जागृति मिशन

चलभाष : 09719601088

कभी-कभी मुझसे यह पूछा जाता है कि हम जप तो बहुत करते हैं, ध्यान में भी बैठते हैं परन्तु सिद्धि नहीं होती, ध्यान एकाग्र नहीं होता। इस प्रश्न का उत्तर में सभी को देना चाहता हूं कि संसार में कोई भी सिद्धि उसके साधन तथा उपसाधन पूरे किये बिना नहीं हो सकती। जैसे किसी रोग को दूर करने के लिए औषधि सेवन करना तो अनिवार्य है ही, परन्तु उसका उपसाधन परहेज है। यदि दवा तो खाते रहें लेकिन बीमारी का परहेज न किया जाये तो मरीज सारी उम्र दवा तो खाता रहेगा परन्तु रोग ठीक नहीं हो सकता। ठीक इसी प्रकार लोग साधना तो करते हैं अर्थात् भक्ति तो करते हैं किन्तु उपसाधन की ओर ध्यान नहीं देते, आचरण, व्यवहार की ओर ध्यान नहीं देते। यही कारण है कि उन्हें सिद्धि प्राप्त नहीं होती और उनका सारा जीवन व्यर्थ में भक्ति के नाम पर चला जाता है। ठीक इसी प्रकार परमात्मा प्राप्ति का साधन है भक्ति, परन्तु उसका उपसाधन है व्यवहार की शुद्धि तथा सरलता, सहजता, सहृदयता आदि। प्राय: लोग भक्ति तो बहुत करते हैं परन्तु उनका व्यवहार शुद्ध नहीं होता। इसलिए उन्हें ईश्वर की प्राप्ति नहीं होती। प्रश्न है कि हम जीवन में ईश्वर की भक्ति को महत्व दे अथवा व्यवहार की शुद्धता को, सद्गुणों को? महाभारत और रामायण में इस प्रश्न का एक ही उत्तर है वह यह है कि ईश्वर भक्ति और व्यवहार दोनों को समान रूप से महत्व देना पड़ेगा। जैसे किसी स्त्री के शरीर पर करोड़ों रूपये के आभूषण तो हों, पर वस्त्र न हों तो वह भोग्य तो हो सकती है, लोगों की दृष्टि में वासना की सृष्टि कर सकती है पर लोगों के अन्त:करण में सद्भाव की सृष्टि करने में समर्थ नहीं है। यदि कोई सभ्य व्यक्ति होगा और उसे लगे कि महिला के शरीर पर वस्त्र नहीं है तो वह दृष्टि उठाकर भी नहीं देखेगा, वह यह भी नहीं सोचेगा कि उसके शरीर पर कितने मूल्यवान आभूषण हैं। इसका अर्थ यह है कि आवश्यकता दोनों की है-वस्त्र भी रहें और आभूषण भी, दोनों का अपना-अपना महत्व है परन्तु यदि दोनों की तुलना की जाये तो यही कहा जा सकता है कि आभूषण एक बार न रहे तो भी काम चल सकता है लेकिन बिना वस्त्रों के काम बिल्कुल भी नहीं चलेगा। व्यवहार यदि अलंकार है तो भगवान की भक्ति वस्त्र। इसलिए शास्त्रों में कहा गया है-

''आचारहीनं न पुनन्ति वेदा:'' अर्थात् आचारण से हीन व्यक्ति को वेद भी पवित्र नहीं कर सकते।

''आचारहीनं न तप पुनाति'' अर्थात् आचारहीन को न तप पवित्र कर सकता है।

''आचारहीनं न पुनन्ति तीर्थानि'' अर्थात् आचारहीन को न तीर्थ पवित्र कर सकते हैं।

''आचारहीनं न चैव सिद्धि'' अर्थात् आचारहीन को न कोई सिद्धि प्राप्त होती है।

रावण के इतिहास से जाना जाता है कि कुल में एक भी दुष्ट पुरूष उत्पन्न हो जाये तो सारे कुल का नाश कर देता है। रावण पुलस्त्य ऋषि का नाती (पौत्र) था, वेदों का पण्डित था परन्तु इतने पर भी मांस खाने, मदिरापान करने और पर स्त्री गमन से उसकी पदवी राक्षस की हो गई थी। अर्थात् उसका आचरण, व्यवहार दूषित हो गया था।

आज हमने सारे पशु-पक्षियों का कब्रस्तान अपने पेट को बनाया हुआ है। जिस परमात्मा की सन्तान हम हैं, उसी की सन्तान बकरा, मुर्गा, मछली, गाय आदि हैं और सभी मूक प्राणी हैं। लेकिन इन प्राणियों को हमने काट-काटकर खाया और अपने को परमात्मा का भक्त कहलवाया। हम मन्दिरों में लोटा ढ़ालते रहे, घण्टा-घढ़ियाल बजाते रहे, परमात्मा का कीर्तन करते रहे और पशु-पक्षियों को मार-मारकर खाते रहे। रावण के काम करते रहे और घरों में रामचरित मानस का अखण्ड कीर्तन करते रहे। हमने पराई नारियों के नंगे चित्रों को देखा, दूरदर्शन पर नाचती हुई सूपर्णखांओं को देखा।.. (शेष पेज 08 पर पढ़ें)

प्रेरक प्रसंग

आलस्य छोड़ो, ऊंचाई छूओ

वंदना प्रिय आर्य
एम.ए., एम.फिल. (संस्कृत)
उपाध्यक्ष : संस्कार जागृति मिशन

एक गरुड़ ने अपने दो बच्चों को अपनी पीठ पर बैठाकर एक सुरक्षित स्थान पर पहुंचा दिया। दोनों बच्चे वहां दिनभर दाना चुगते रहे। शाम को गरुड़ ने फिर बच्चों को अपनी पीठ पर बैठाकर अपने घर पहुंचा दिया। रोज यही क्रम चलने लगा। बच्चों ने सोचा कि जब पिताजी पीठ पर बैठाकर ले जाते हैं तो हमें उड़ाने की क्या जरूरत है।

गरुड़ ने समझ लिया कि उसके दोनों बच्चे आलसी हो गए हैं और मेहनत नहीं करना चाहते हैं। इसीलिए उड़ना नहीं सीख रहे हैं। एक दिन सुबह-सुबह गरुड़ ने बच्चों को अपनी पीठ पर बैठाकर ऊंची उड़ान भरी। ऊंचाई पर पहुंचकर गरुड़ ने पीठ पर बैठे दोनों बच्चों को गिरा दिया। अब दोनों बच्चों ने अपने-अपने पंख फड़फड़ाना शुरू कर दिए। उस दिन उन्हें समझ आ गया कि उड़ना सीखना बहुत जरूरी है। किसी तरह दोनों बच्चों ने अपने प्राण बचा लिए। शाम को घर पहुंचकर दोनों बच्चों ने अपनी माता मादा गरुड़ से कहा कि मां आज हमने पंख न फड़फड़ाए होते तो पिताजी ने मरवा ही दिया था। मादा गरुड़ ने अपने बच्चों से कहा कि जो लोग अपने आप नहीं सीखते हैं, आलस्य नहीं छोड़ते हैं, उन्हें सिखाने का यही नियम है। हमारी पहचान ऊंची उड़ान से होती है, यही हमारी योग्यता है। इसे बढ़ाने के लिए लगातार अभ्यास करते रहने की जरूरत है। बच्चों को अपनी मां की बातें समझ आ गईं, इसके बाद उन्होंने भी आलस्य छोड़कर उड़ना सीखा और लगातार अभ्यास से वे भी काफी ऊंचाई तक उड़ने लगे।

अगर हम सफल होना चाहते हैं तो हमें आलस्य छोड़कर अपनी योग्यता को बढ़ाते रहना चाहिए। किसी भी काम में परफेक्ट होने के लिए लगातार अभ्यास करते रहना चाहिए। इस कहानी में गरुड़ के बच्चे आलसी थे, इस कारण उड़ना नहीं सीख रहे थे। गरुड़ की योग्यता यही है कि वे काफी ऊंचाई तक उड़ सकते हैं। इसके लिए गरुड़ के बच्चों ने आलस्य छोड़कर उड़ना सीख लिया।

पृष्ठ 07 का शेष....

परमात्मा को सदाचार ही सबसे प्रिय है (लेखक : आचार्य सत्यप्रिय आर्य)

.....आज कितनी सूपर्णखांए अलंकृत होकर सड़कों पर फिरतीं हैं जो विश्व सुन्दरी के लालच में अंग प्रदर्शन करती हैं, उन्हें देश का नौजवान देख रहा है-जो भ्रष्ट आचरण का ही अंग है, जो रावण का ही काम है जो पराई नारी को हर के ले गया था लेकिन रावण ने उस पर नारि से हाथ नहीं लगाया था-एक दृष्टि में तो रावण बहुत महान था, आज के रामभक्तों से भी महान था-रावण की कैद में सीता माता है, उस समय रावण सीता से कहता है 'हे सीते तुम डरो नहीं मैं तुम्हारी इच्छा के बिना तुम्हारे शरीर से हाथ नहीं लगा सकता' और आगे कहता है कि दो महीने के अन्दर तुम्हें मेरी पत्नी बनना ही होगा अगर नहीं बनेगी तो मेरे सेवक तुम्हारे शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर के खा जायेंगे। रावण ने यह नहीं कहा कि अगर तुम मेरी पत्नी नहीं बनीं तो जबरन पत्नी बना लुंगा, रावण ने बलात्कार नहीं किया, रावण ने सीता से हाथ भी नहीं लगाया, इसलिए रावण महान था। मैं राम के भक्तों से कहना चाहता हूं जो टीवी पर अश्लील फिल्में देखते हैं, जो दूसरी बहिन-बेटियों को कुदृष्टि से देखते हैं, जो गलियों में घूमते-फिरते हैं, अश्लील गाने गाना, नग्न चित्र देखना, व्यभिचार करना ये सब आज के रामभक्त के आचरण के अंग बन गये हैं। आये दिन टीवी व समाचार पत्रों में खबरे चलती रहती हैं। इसलिए आज के परिपेक्ष में अगर कहा जाये तो रावण महान था, जिसे हम दुराचारी कहते हैं। आज के राजनेताओं से अच्छा था, आज के धर्मगुरूओं से अच्छा था और आज के साधुओं से भी अच्छा था क्योंकि आचरण से भ्रष्ट होकर आज के तथाकथित बड़े-बड़े राजनेता, धर्मगुरू, साधु जेल के सीकचों में आजीवन कारावास काट रहे हैं। इसलिए ईश्वर की प्राप्ति के लिए जहां साधन भक्ति है, वहां उपसाधन आचरण भी परम आवश्यक है।...... (शेष अगले अंक में)

स्वास्थ्य चर्चा

'अदरक' के लाभकारी गुण

नीति प्रिय आर्य

अदरक खाद्य पदार्थ होने के साथ-साथ आयुर्वेदिक औषधि भी है। अगर भोजन में स्वाद का तड़का लगाना हो, तो अदरक का इस्तेमाल किया जाता है। वहीं, बात की जाए औषधि के रूप में अदरक के सेवन की, तो यह कई बीमारियां का इलाज करने में सक्षम है। यही कारण है कि आयुर्वेद में अदरक विशेष महत्व रखता है। भारतीय रसोई में जमकर इस्तेमाल की जाने वाली अदकर की तासीर गर्म होती है और यही वजह है कि इसे सर्दियों में ज्यादा इस्तेमाल किया जाता है। अदरक शरीर को गर्म रख सर्दी-खांसी, गले की खराश, फ्लू और सीजन की कई बीमारियों से बचाती है। अदरक में प्रोटीन, आयरन, कैल्शियम, कार्बोहाइड्रेटस जैसे तत्व होते हैं। जो हमारे शरीर को स्वस्थ रखने का काम करते हैं। अदरक से हमारे शरीर को एनर्जी और जोश मिलता है। अदरक खाने से कई फायदे होते हैं। आइसे जानते हैं अदरक से होने वाले कुछ फायदे।

अदरक से दस घरेलू उपचार :-

1. जो लोग अदरक के जूस का उपयोग नियमित तौर पर करते हैं उन्हें जोड़ों में सूजन और दर्द पैदा करने वाली बीमारियां परेशान नहीं करतीं। आपके जोड़ों की समस्या नई हो या कई साल पुरानी उनमें अदरक का जूस बहुत असरकारी है।

2. अदरक में खून को पतला करने का नायाब गुण होता है और इसी वजह से यह ब्लड प्रेशर जैसी बीमारी में तुरंत लाभ के लिए जाना जाता है। अदरक में खून को साफ करने का खास गुण होता है।

3. सभी प्रकार के दर्द से राहत देने की इसकी क्षमता इसे बहुत ही खास बनाती है। चाहे आपके दांत में दर्द हो या सिर में- अदरक बहुत असरकारक है। यह माइग्रेन से बचने में भी आपकी भरपूर मदद करता है।

4. अदरक में कैंसर जैसी भयानक बीमारी से शरीर को बचाए रखने का गुण होता है। यह कैंसर पैदा करने वाले सेल्स को खत्म करता है।

6. अदरक का जूस आपके पेट में पड़े हुए खाने को निकास द्वार की तरफ धकेलता है। अदरक का यह चमत्कारी गुण आपको न केवल पाचन और गैस बल्कि सभी तरह के पेट दर्द से भी निजात दिलाता है।

7. अदरक में गठिया रोग को भी ठीक करने की क्षमता होती है। इसके सूजन को खत्म करने वाले गुण गठिया और थायराईड से ग्रस्त मरीजों के लिए बहुत फायदेमंद हैं।

8. अदरक को सर्दी से बचाने में सबसे अधिक कारगर माना जाता है। यह सर्दी पैदा करने वाले बैक्टीरिया को खत्म करने के साथ-साथ सर्दी फिर से आपको परेशान न कर पाए, यह भी पक्का करती है।

9. घने और चमकदार बालों के लिए अदरक का शुद्ध जूस सिर पर लगाएं जिसमें पानी की मात्रा बिलकुल न हो। यह न केवल आपके बाल स्वस्थ बना देगा बल्कि यह आपको रूसी से भी छुटकारा दिला देगा।

10. त्वचा से जुड़ी हुई समस्या के लिए अदरक के जूस को नियमित तौर पर इस्तेमाल करना शुरू करें। अदरक से आप मुहांसों से हमेशा के लिए निजात पा सकते हैं।

(हालांकि ये सभी घरेलू उपचार हैं फिर भी डॉक्टर से परामर्श ले लेना बेहतर होगा)

संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां

गणतन्त्र दिवस पर मथुरा के अजय नगर स्थित मां सरस्वती पब्लिक जू.हा.स्कूल में उद्‌बोधन देतीं संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय आर्य जी।

स्कूल प्रबंधक के.जी. चौधरी जी मुख्य अतिथि संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय आर्य जी को सम्मानित करते हुए।

मथुरा के अजय नगर स्थित मां सरस्वती जूनियर हाईस्कूल में गणतन्त्र दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय आर्य जी के वैज लगाती शिक्षिका एवं बच्चों को पुरस्कृत करतीं श्रद्धेया बहिन जी।

समाजसेवी चौ.लाल सिंह आर्य जी को सम्मान पत्र भेंट कर सम्मानित करतीं संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय आर्य जी। साथ हैं केसव सिंह सूबेदार जी व केजी चौधरी जी।

संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां

युवा भारत, मथुरा द्वारा गुरूकुल विश्वविद्यालय, वृन्दावन में आयोजित जिला स्तरीय योग प्रतियोगिता में मुख्य अतिथि संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय आर्य जी को सम्मानित करते जिला प्रभारी तीर्थराज आर्य जी, अमर सिंह पौनियां जी। दूसरे चित्र में सम्बोधन करतीं श्रद्धेया बहिन जी।

जिला स्तरीय योग प्रतियोगिता में श्रद्धेया डा.अर्चना प्रिय आर्य जी को सम्मानित करतीं भारत स्वाभिमान की पदाधिकारी। प्रतियोगिता में विजयी विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र देतीं संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डा0 अर्चना प्रिय आर्य जी।

संस्कार जागृति मिशन के स्थापना दिवस पर स्ट्रीट स्कूल में आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करतीं अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय आर्य जी। मंचस्थ हैं सचिव विवेक प्रिय आर्य, उपाध्यक्ष वंदना प्रिय आर्य जी व स्ट्रीट स्कूल संचालक सतीश शर्मा जी।

संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां

पुलवामा के शहीदों की याद में आयोजित कार्यक्रम में संस्कार जागृति मिशन अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय आर्य जी को सम्मानित करते डीयू की पूर्व सचिव अंजलि राणा जी व सीआईएसएफ के डिप्टी कमाडेंट। दूसरे चित्र में मौजूद शहीद की वीरांगना, बहिन जी व अन्य।

एक शाम शहीदों के नाम कार्यक्रम का शुभारंभ करतीं श्रद्धेया बहिन जी व बीएसएफ व सीआईएसएफ के अधिकारीगण।

बाल अधिकार कार्यकर्ता सतीश शर्मा जी को सम्मानित करतीं मिशन की अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय आर्य जी, उपाध्यक्ष वंदना प्रिय आर्य जी व सचिव विवेक प्रिय आर्य जी।

संस्कार जागृति मिशन के स्थापना दिवस के अवसर पर स्ट्रीट स्कूल में आयोजित कार्यक्रम के दौरान मिशन की पदाधिकारीगण।

संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां

मिशन की अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय आर्य जी को सम्मानित करते ब्रज प्रेस क्लब अध्यक्ष कमलकांत उपमन्यु व अलका उपमन्यु जी। साथ हैं मिशन के सचिव विवेक प्रिय आर्य जी

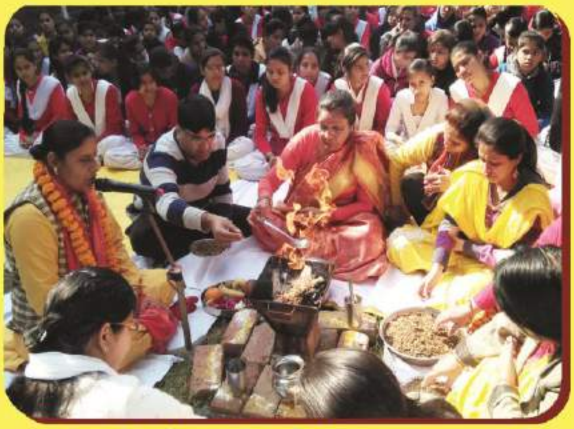

बसंत पंचमी पर प्रेम देवी अग्रवाल गर्ल्स इंटर कॉलेज में यज्ञ करातीं मिशन की अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय आर्य जी।

प्रेम देवी गर्ल्स इंटर कॉलेज में कार्यक्रम को सम्बोधित करतीं मिशन अध्यक्ष डा0 अर्चना प्रिय आर्य जी।

गणतंत्र दिवस समारोह को सम्बाधितकरतीं मिशन की उपाध्यक्ष वंदना प्रिय आर्य जी।

शहीदों की याद में आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करतीं डा0 अर्चना प्रिय आर्य जी।

प्रेम देवी गर्ल्स इंटर कॉलेज की प्राधानाचार्या माल्यार्पण कर बहिन जी को सम्मानित करतीं।

संस्कार जागृति मिशन के सचिव विवेक प्रिय आर्य जी को सम्मानित करते केजी चौधरी जी।

संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां मीडिया की नजरों में

अमर उजाला आगरा | रविवार, 2 फरवरी 2020

स्ट्रीट स्कूल में मना स्थापना दिवस

सतीश शर्मा को सम्मानित करतीं डॉ. अर्चना प्रिय आर्य। संवाद

मथुरा। संस्कार जागृति मिशन ने अपना स्थापना दिवस अवधपुरी स्थित जस्टिस फॉर चिल्ड्रेन स्ट्रीट स्कूल में बच्चों के बीच जाकर मनाया। मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य ने बच्चों को भारतीय संस्कृति एवं संस्कारों के बारे में अवगत कराया और राष्ट्र प्रेम की भी शिक्षा दी। उन्होंने कहा कि संस्कारित बच्चे ही परिवार, समाज और देश का नाम रोशन करते हैं। इस अवसर पर स्कूल संचालक सतीश शर्मा, मिशन के सचिव विवेक प्रिय आर्य, वंदना प्रिय आर्य, डॉ. कपिल प्रताप सिंह, तन्नु, वंदना, सीमा मौजूद थे। संवाद

अमर उजाला आगरा | बुधवार, 5 फरवरी 2020

'परिवारों से विलुप्त हो रहे हैं संस्कार'

उपजा के प्रदेश उपाध्यक्ष उपमन्यु ने कहा कि इन्हें पुन: स्थापित करने की जरूरत

संवाद न्यूज एजेंसी

डॉ. अर्चना प्रिय आर्य को सम्मानित करते उपजा प्रदेश उपाध्यक्ष कमलकांत उपमन्यु।

मथुरा। ब्रज प्रेस क्लब के अध्यक्ष और उपजा के प्रदेश उपाध्यक्ष कमलकांत उपमन्यु एडवोकेट ने भारतीय संस्कृति और संस्कारों के लिए कार्य कर रहीं संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य को अभिनंदन पत्र भेंट कर सम्मानित किया। इस अवसर पर अधिवक्ता उपमन्यु ने कहा कि संस्कार जागृति मिशन की ओर से सराहनीय कार्य किये जा रहे हैं। आज के दौर में परिवारों से संस्कार विलुप्त होते जा रहे हैं। इन्हें परिवारों में स्थापित करने की जरूरत है।

आयोजित कार्यक्रम के दौरान बार एसोसिएशन की पूर्व कोषाध्यक्ष और ऑडिटर अलका उपमन्यु एडवोकेट ने कहा कि हमें अपनी सभ्यता व संस्कृति से नहीं काटना चाहिए। इसके लिए बच्चों को अपनी सभ्यता, संस्कृति व संस्कारों का ज्ञान कराना आवश्यक है। मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय ने आभार व्यक्त करते हुए कहा कि अपनी संस्कृति पर सभी को गर्व होना चाहिए। संस्कारों को अपने बच्चों से जोड़ने की आज जरूरत है। इस अवसर पर मिशन के सचिव विवेक प्रिय आर्य, डॉ. कपिल प्रताप सिंह, उत्कर्ष प्रताप आर्य आदि मौजूद रहे।

आज आगरा, 05 फरवरी 2020

संस्कारों को घरों में पुनः स्थापित करने की जरूरत : उपमन्यु

मथुरा। ब्रज प्रेस क्लब के अध्यक्ष व उपजा के प्रदेश उपाध्यक्ष कमलकांत उपमन्यु एडवोकेट ने भारतीय संस्कृति व संस्कारों के लिए कार्य कर रहीं संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना

प्रिय आर्य को अभिनंदन पत्र भेंट कर सम्मानित किया। इस अवसर पर श्री उपमन्यु ने कहा कि संस्कार जागृति मिशन द्वारा सराहनीय कार्य किये जा रहे हैं। आज के दौर में परिवारों से संस्कार विलुप्त होते जा रहे हैं, उन्हें पुनः परिवारों में स्थापित करने की जरूरत है। बार एसोसिएशन की पूर्व कोषाध्यक्ष व

छोटी सी बात मथुरा। 01 फरवरी 2020

बच्चों को वितरित की पाठय-खाद्य सामग्री

मथुरा (छोटी सी बात)। संस्कार जागृति मिशन ने अपना स्थापना दिवस अवधपुरी स्थित जस्टिस फॉर चिल्ड्रन स्ट्रीट स्कूल में बच्चों के बीच जाकर मनाया। अध्यक्ष डा. अर्चना प्रिय आर्य ने बच्चों को भारतीय संस्कृति एवं संस्कारों के बारे में अवगत कराया और राष्ट्र प्रेम की भी शिक्षा दी। कहा कि संस्कारित बच्चे ही परिवार, समाज व देश का नाम रोशन करते हैं। मिशन की ओर से सभी बच्चों को पाठय व खाद्य सामग्री वितरित की गई। बाल अधिकार कार्यकर्ता सतीश शर्मा ने सभी का आभार व्यक्त किया। संचालन मिशन के सचिव विवेक प्रिय आर्य ने किया। मिशन के कार्यालय पर वैदिक विधि विधान से यज्ञ अनुष्ठान संपन्न हुआ। इस दौरान मिशन की उपाध्यक्ष वंदना प्रिय आर्य, डा. कपिल प्रताप सिंह, तन्नु, वंदना, सीमा आदि मौजूद थे।

THE SEA EXPRESS आगरा, रविवार, 02 फरवरी 2020

बाल अधिकारों एवं वंचित समाज के बच्चों को शिक्षा से जोड़ने के लिए संस्कार जागृति सम्मान

01 फरवरी 2020 राजपथ मथुरा

संस्कार जागृति मिशन ने मनाया स्थापना दिवस

- बच्चों को वितरित की पाठय व खाद्य सामग्री
- डॉ. अर्चना प्रिय ने बच्चों को बताया संस्कारों का महत्व

मथुरा, (राजपथ मथुरा ब्यूरो)। संस्कार जागृति मिशन ने अपना स्थापना दिवस अवधपुरी स्थित जस्टिस फॉर चिल्ड्रन स्ट्रीट स्कूल में बच्चों के बीच जाकर मनाया। इस अवसर पर मिशन की अध्यक्ष डा. अर्चना प्रिय आर्य ने बच्चों को भारतीय संस्कृति एवं संस्कारों के बारे में अवगत कराया और राष्ट्र प्रेम की भी शिक्षा दी। उन्होंने कहा कि संस्कारित बच्चे ही परिवार, समाज व देश का नाम रोशन करते हैं। इस दौरान मिशन के पदाधिकारियों द्वारा गरीब बच्चों के लिए चलाए जा रहे स्ट्रीट स्कूल संचालक सतीश शर्मा को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। मिशन की ओर से सभी बच्चों को पाठय व खाद्य सामग्री वितरित की गई। बाल अधिकार कार्यकर्ता सतीश शर्मा ने सभी का आभार व्यक्त किया और संचालन मिशन के सचिव विवेक प्रिय आर्य ने किया। इससे पूर्व प्रात:काल मिशन के कार्यालय पर वैदिक विधि विधान से यज्ञ अनुष्ठान संपन्न हुआ। चिल्ड्रेन स्ट्रीट स्कूल में जाकर उनको संस्कारों के बारे में बताया और पाठ्य व ख को मिशन द्वारा सम्मानित किया गया। मिशन की उपाध्यक्ष वंदना प्रिय आर्य, डा. कपिल प्रताप सिंह, तन्नु, वंदना, सीमा सहित सैकड़ों बच्चे मौजूद रहे।

आज आगरा, 02 फरवरी 2020

संस्कार जागृति मिशन ने स्ट्रीट स्कूल में मनाया स्थापना दिवस

मथुरा। संस्कार जागृति मिशन ने अपना स्थापना दिवस अवधपुरी स्थित जस्टिस फॉर चिल्ड्रन स्ट्रीट स्कूल में बच्चों के बीच जाकर मनाया। इस अवसर पर मिशन की अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय आर्य ने बच्चों को भारतीय संस्कृति एवं संस्कारों के बारे में अवगत कराया और राष्ट्र प्रेम की भी शिक्षा दी। उन्होंने कहा कि संस्कारित बच्चे ही परिवार, समाज व देश का नाम रोशन करते हैं। इस दौरान मिशन के पदाधिकारियों द्वारा गरीब बच्चों के लिए चलाए जा रहे स्ट्रीट स्कूल संचालक सतीश शर्मा को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। मिशन की ओर से सभी बच्चों को पाठय व खाद्य सामग्री वितरित की गई। बाल अधिकार कार्यकर्ता सतीश शर्मा ने सभी का आभार व्यक्त किया और संचालन मिशन के सचिव विवेक प्रिय आर्य ने किया। इससे पूर्व प्रात:काल मिशन के कार्यालय पर वैदिक विधि विधान से यज्ञ अनुष्ठान संपन्न हुआ। चिल्ड्रेन स्ट्रीट स्कूल में जाकर उनको संस्कारों के बारे में बताया और पाठ्य व जागृति मिशन द्वारा सम्मानित किया गया। मिशन की उपाध्यक्ष वंदना प्रिय आर्य, डा.कपिल प्रताप सिंह, तन्नु, वंदना, सीमा सहित सैकड़ों बच्चे मौजूद रहे।

THE SEA EXPRESS आगरा, बुधवार, 05 फरवरी 2020

संस्कारों को घरों में पुन स्थापित करने की जरूरतःउपमन्यु

मथुरा। ब्रज प्रेस क्लब के अध्यक्ष व उपजा के प्रदेश उपाध्यक्ष कमलकांत उपमन्यु एडवोकेट ने भारतीय संस्कृति व संस्कारों के लिए कार्य कर रहीं संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य को अभिनंदन पत्र भेंट कर सम्मानित किया। इस अवसर पर श्री उपमन्यु ने कहा कि संस्कार जागृति मिशन द्वारा सराहनीय कार्य किये जा रहे हैं। आज के दौर में परिवारों से संस्कार विलुप्त होते जा रहे हैं, उन्हें पुनः परिवारों में स्थापित करने की जरूरत है। बार एसोसिएशन की पूर्व कोषाध्यक्ष व ऑडीटर अलका उपमन्यु एडवोकेट ने कहा कि हमें अपनी सभ्यता व संस्कृति से नहीं काटना चाहिए। इसके लिए बच्चों को अपनी सभ्यताए संस्कृति व संस्कारों का ज्ञान कराना आवश्यक है। मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय ने आभार व्यक्त करते हुए कहा कि अपनी संस्कृति पर सभी को गर्व होना चाहिए। जिस आचरण के द्वारा हम पूरी दुनिया में जाने जाते थे, उन्हीं संस्कारों को अपने बच्चों से जोड़ने की आज जरूरत है। इस अवसर पर मिशन के सचिव विवेक प्रिय आर्य, डॉ.कपिल प्रताप सिंह, उत्कर्ष प्रताप आर्य आदि मौजूद रहे।

विशाल इण्डिया

संस्कारों को घरों में पुनः स्थापित करने की जरूरतः उपमन्यु

विशाल इण्डिया संवाददाता

मथुरा। ब्रज प्रेस क्लब के अध्यक्ष व उपजा के प्रदेश उपाध्यक्ष कमलकांत उपमन्यु एडवोकेट ने भारतीय संस्कृति व संस्कारों के लिए कार्य कर रहीं संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डॉ.अर्चना प्रिय आर्य को अभिनंदन पत्र भेंट कर सम्मानित किया। इस अवसर पर श्री उपमन्यु ने कहा कि संस्कार जागृति मिशन द्वारा सराहनीय कार्य किये जा रहे हैं। आज के दौर में

अपनी सभ्यताए संस्कृति व संस्कारों का ज्ञान कराना आवश्यक है। मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय ने आभार व्यक्त करते हुए कहा कि अपनी संस्कृति पर सभी को गर्व होना चाहिए।

04 फरवरी 2020 राजपथ मथुरा

संस्कारों को घरों में पुन: स्थापित करने की जरूरत: उपमन्यु

उपजा प्रदेश उपाध्यक्ष ने किया डॉ. अर्चना प्रिय को सम्मानित

मथुरा, (राजपथ मथुरा ब्यूरो)। ब्रज प्रेस क्लब के अध्यक्ष व उपजा के प्रदेश उपाध्यक्ष कमलकांत उपमन्यु एडवोकेट ने भारतीय संस्कृति व संस्कारों के लिए कार्य कर रहीं संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य को अभिनंदन पत्र भेंट कर सम्मानित किया। इस अवसर पर श्री उपमन्यु ने कहा कि संस्कार जागृति मिशन द्वारा सराहनीय कार्य किये जा रहे हैं। आज के दौर में परिवारों से संस्कार विलुप्त होते जा रहे हैंए उन्हें पुन: परिवारों में स्थापित करने की जरूरत है। बार एसोसिएशन की पूर्व कोषाध्यक्ष व ऑडीटर अलका उपमन्यु एडवोकेट ने कहा कि हमें अपनी

संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां मीडिया की नजरों में

दैनिक जागरण आगरा/मथुरा, 30 जनवरी 2020

योग को बनाएं जीवन का अहम हिस्सा

वृंदावन के गुरुकुल में जिला स्तरीय योग प्रतियोगिता में विजेता विद्यार्थियों को प्रमाणपत्र देतीं संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य ● जागरण

जासं, वृंदावनः पतंजलि योगपीठ के युवा संगठन युवा भारत की गुरुकुल में जिला स्तरीय योग प्रतियोगिता का शुभारंभ मुख्य अतिथि संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य ने दीप प्रज्वलन कर किया। डॉ. आर्या ने विद्यार्थियों से तन और मन को स्वस्थ रखने के लिए योग को दैनिक जीवन में भी अपनाने का आह्वान किया। कहा योग को जीवन का अहम हिस्सा बनाएं। योग सिर्फ एक्सरसाइज का एक सेट नहीं है बल्कि यह फिटनेस और वेलनेस पाने का सबसे आसान तरीका भी है।

स्पर्धा में जिले से 65 विद्यार्थियों ने भाग लिया। कक्षा छठी से आठवीं बाल वर्ग में वैभव शर्मा और बालिका वर्ग में देवांशी द्विवेदी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। कक्षा 9 से 10वीं के बाल वर्ग में मृदुल तथा बालिका वर्ग में शीतल ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। इनको मुख्य अतिथि डॉ. आर्य द्वारा प्रमाण पत्र व पुरस्कार देकर सम्मानित किया। युवा भारत के जिला प्रभारी तीर्थराज आर्य ने बताया इन विद्यार्थियों को राज्य स्तरीय योग प्रतियोगिता में भेजा जाएगा। भारत स्वाभिमान के जिला प्रभारी डॉ. अमर सिंह पोनिया, गिर्राज प्रसाद वशिष्ठ, गोपाल दीक्षित, कैलाश द्विवेदी, रामबिहारी आर्य, कपिल प्रताप सिंह, श्यामलता अग्रवाल, रुचि द्विवेदी, सरोज यति मौजूद रहे।

THE SEA EXPRESS आगरा, रविवार, 16 फरवरी 2020

जवानों की शहादत का नहीं है कोई मूल्य

सेना के जवान को सम्मानित करतीं संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य व अन्य अतिथिगण।

मथुरा। पुलवामा में हुए देश के अमर शहीदों को भावपूर्ण श्रद्धांजलि हेतु मथुरा के बाद स्थित श्रीकृष्ण सरोवर, बी.एस.एफ. कैम्प में एक शाम शहीदों के नाम कार्यक्रम आयोजित किया, जिसमें जवानों द्वारा देशभक्ति के तराने व वक्ताओं ने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का शुभारंभ बीएसएफ के डिप्टी कमांडेंट योगेन्द्र कुमार, पूनिया, सीआईएसएफ के डिप्टी कमांडेंट अभिषेक कुमार साहू, असिस्टेंट कमांडेंट हरेन्द्र कुमार, संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य, दिल्ली विश्वविद्यालय की पूर्व सचिव अंजलि राणा, ठाकुर यशवीर सिंह राघव द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। इस अवसर पर शहीद इंस्पेक्टर सुबोध कुमार सिंह की वीरांगना व जवानों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि जवानों की शहादत का कोई मूल्य नहीं है। वो हमेशा अमर रहेंगे। उन्होंने कहा कि सेना के जवानों के कारण ही हम सभी चैन की स्वांस ले रहे हैं। बीएसएफ व सीआईएसएफ के अधिकारियों, शिक्षक नेता यशवीर राघव, डीयू की पूर्व सेक्रेटरी अंजलि राणा ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम आयोजक हिमांजलि फाउंडेशन के पदाधिकारियों द्वारा सभी अतिथियों का शॉल व स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मान किया गया। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से कार्यक्रम आयोजक हिमांजलि फाउंडेशन के पदाधिकारियों द्वारा सभी अतिथियों का शॉल व स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मान किया गया। कार्यक्रम में सीआईएसएफ इंस्पेक्टर राजीव कुमार, दुर्गा, कुलदीप राणा, युवा कवि रितेश गौतम, हिमांजलि फाउंडेशन के मीडिया प्रभारी दिनेश सिंह तरकर, सौरभ सिसोदिया, हिमांशु राणा, बिहारी सिंह, हिमांशु नागरवाल, कवि रितेश गौतम, विपिन यादव, प्रसून यादव, देव तोमर, बालो बाबा, कल्याण लंबरदार, चंदन सिंह सहित सैकड़ों लोग प्रमुख रूप से मौजूद रहे।

दैनिक जागरण आगरा/मथुरा, 31 जनवरी 2020

प्रेमदेवी गर्ल्स इंटर कॉलेज में डॉ. अर्चना प्रिय आर्य के ब्रह्मत्व में आयोजित यज्ञ में आहुति देती छात्राएं ● सौ. प्रेमदेवी गर्ल्स इंटर कॉलेज

छोटी सी बात 31 जनवरी 2020

छात्राओं ने दी यज्ञ में आहुति

मथुरा (छोटी सी बात)। बसन्त पंचमी पर प्रेमदेवी अग्रवाल गर्ल्स इंटर कॉलेज में यज्ञ का आयोजन किया गया, जिसमें छात्राओं ने आहुति प्रदान कर मां सरस्वती से मेधा बुद्धि की कामना की। संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि

छात्राओं को भारतीय संस्कृति व संस्कारों की गौरवशाली परम्पराओं का ज्ञान होना जरूरी है। यज्ञ हमारी प्राचीन परंपरा है, इसे प्रत्येक घर में प्रतिष्ठित करना चाहिए। कॉलेज के प्रबन्धक गौरव अग्रवाल ने मां सरस्वती की तस्वीर पर माल्यार्पण किया। प्रधानाचार्या दयारानी शर्मा ने बारहवीं कक्षा में सबसे अधिक नंबर प्राप्त करने वाली छात्रा करिश्मा को सम्मानित किया। कॉलेज की छात्रा आयशा ने सरस्वती वंदना नृत्य के साथ प्रस्तुत की। कार्यक्रम में सुप्रिया सिंह, अपर्णा मिश्रा, भारती गोस्वामी, पिंकी चौधरी, ऋतु व्यास, रीतिका गुप्ता, गुंजन सारस्वत, सीमा शर्मा, मनीषा शर्मा, रजनी चाहर, ग्रेसी, संजय सिंह, सतेंद्र सिंह, सुरेश चंद आदि मौजूद थे।

29 जनवरी 2020 **राजपथ मथुरा**

योग को बनाएं अपने जीवन का अहम हिस्सा: डॉ. अर्चना

गुरुकुल विश्वविद्यालय में हुआ जिला स्तरीय योग प्रतियोगिता का आयोजन

छोटी सी बात 15 फरवरी 2020

जवानों की शहादत का नहीं है कोई मूल्य

बीएसएफ कैम्प में आयोजित हुआ एक शाम शहीदों के नाम कार्यक्रम

31 जनवरी 2020 **राजपथ मथुरा**

बसंत पंचमी पर छात्राओं ने दी यज्ञ में आहुति

प्रेम देवी अग्रवाल गर्ल्स इंटर कॉलेज में मना बसंत पंचमी पर्व

मथुरा, (राजपथ मथुरा ब्यूरो)। बसन्त पंचमी के अवसर पर प्रेमदेवी अग्रवाल गर्ल्स इंटर कॉलेज में यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें छात्राओं ने आहुति प्रदान कर मां सरस्वती से मेधा बुद्धि की कामना की। यज्ञ संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डॉ अर्चना प्रिय आर्य के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि छात्राओं को भारतीय संस्कृति व संस्कारों की गौरवशाली परम्पराओं का ज्ञान होना जरूरी है। यज्ञ हमारी प्राचीन परंपरा है इसे प्रत्येक घर में प्रतिष्ठित करना चाहिए। कॉलेज के प्रबन्धक गौरव अग्रवाल ने मां सरस्वती की तस्वीर पर माल्यार्पण किया। प्रधानाचार्या दयारानी शर्मा ने सभी का आभार व्यक्त किया और बारहवीं कक्षा में सबसे अधिक नंबर प्राप्त करने वाली छात्रा करिश्मा को सम्मानित किया। कॉलेज की छात्रा आयशा ने सरस्वती वंदना नृत्य के साथ प्रस्तुत की। कार्यक्रम में सुप्रिया सिंह, अपर्णा मिश्रा, भारती गोस्वामी, पिंकी चौधरी, ऋतु व्यास, रीतिका गुप्ता, गुंजन सारस्वत, सीमा शर्मा, मनीषा शर्मा, रजनी चाहर, संजय सिंह, सतेंद्र सिंह, सुरेश चंद सहित कॉलेज की छात्राएं मौजूद रहीं।

हिन्दुस्तान • गुरुवार • 30 जनवरी 2020 •

योग को बनाएं अपने जीवन का अहम हिस्सा

वृंदावन। पतंजलि योगपीठ के युवा संगठन युवा भारत के तहत ग्राम राजपुर स्थित गुरुकुल विद्यालय में जिलास्तरीय योग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें जिलेभर से आए विद्यार्थियों ने योगासन का प्रदर्शन किया। मुख्य अतिथि संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य ने विद्यार्थियों से तन और मन को स्वस्थ रखने के लिए योग को दैनिक जीवन में अपनाने का आह्वान किया।

अमर उजाला आगरा | बृहस्पतिवार, 30 जनवरी 2020

'योग को बनाएं जीवन का अहम हिस्सा'

प्रमाण पत्र देतीं अर्चना प्रिय आर्या।

वृंदावन। पतंजलि योगपीठ के युवा संगठन युवा भारत की ओर से गुरुकुल विवि में जिला स्तरीय योग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। स्पर्धा का शुभारंभ संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य ने योग को दैनिक जीवन में अपनाने का आह्वान किया। इस दौरान 65 विद्यार्थियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता में वैभव शर्मा और बालिका वर्ग में देवांशी द्विवेदी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। कक्षा 9 से 10वीं के वर्ग में मृदुल, बालिका वर्ग में शीतल प्रथम रहीं। युवा भारत के जिला प्रभारी तीर्थराज आर्य, भारत स्वाभिमान के जिला प्रभारी डॉ. अमर सिंह पोनियां, गिर्राज प्रसाद वशिष्ठ, गोपाल दीक्षित, कैलाश द्विवेदी, रामबिहारी आर्य, कपिल प्रताप सिंह, श्यामलता अग्रवाल, रुचि द्विवेदी, सरोज मौजूद रहे। संवाद

30 जनवरी 2020 **ब्रज गरिमा**

प्रेमदेवी अग्रवाल गर्ल्स इंटर कॉलेज में मनाया बसंत पंचमी का पर्व

डॉ. अर्चना प्रिय आर्य के ब्रह्मत्व में आयोजित यज्ञ में आहुति देती छात्राएं।

मथुरा, बसन्त पंचमी के अवसर पर प्रेमदेवी अग्रवाल गर्ल्स इंटर कॉलेज में यज्ञ का आयोजन किया गया, जिसमें छात्राओं ने आहुति प्रदान कर माँ सरस्वती से मेधा बुद्धि की कामना की। यज्ञ संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि छात्राओं को भारतीय संस्कृति व संस्कारों की गौरवशाली परम्पराओं का ज्ञान होना जरूरी है। यज्ञ हमारी प्राचीन परंपरा है, इसे प्रत्येक घर में प्रतिष्ठित करना चाहिए।

कॉलेज के प्रबन्धक गौरव अग्रवाल ने माँ सरस्वती की तस्वीर पर माल्यार्पण किया। प्रधानाचार्या दयारानी शर्मा ने सभी का आभार व्यक्त किया और बारहवीं कक्षा में सबसे अधिक नंबर प्राप्त करने वाली छात्रा करिश्मा को सम्मानित किया। कॉलेज की छात्रा आयशा ने सरस्वती वंदना नृत्य के साथ प्रस्तुत की। कार्यक्रम में सुप्रिया सिंह, अपर्णा मिश्रा, भारती गोस्वामी, पिंकी चौधरी, ऋतु व्यास, रीतिका गुप्ता, गुंजन सारस्वत, सीमा शर्मा, मनीषा शर्मा, रजनी चाहर, ग्रेसी, संजय सिंह, सतेंद्र सिंह, सुरेश चंद सहित कॉलेज की छात्राएं मौजूद रहीं।

हिन्दुस्तान • आगरा • रविवार • 16 फरवरी 2020 •

जवानों की शहादत अमूल्य

मथुरा | हिन्दुस्तान संवाद

पुलवामा शहीदों की श्रद्धांजलि के लिए बाद स्थित बीएसएफ कैंप में एक शाम शहीदों के नाम कार्यक्रम आयोजित हुआ। इसमें जवानों ने देशभक्ति के तराने व वक्ताओं ने विचार व्यक्त किए।

इसका शुभारंभ बीएसएफ के डिप्टी कमांडेंट योगेन्द्र कुमार पूनिया, सीआईएसएफ के डिप्टी कमांडेंट अभिषेक कुमार साहू, असिस्टेंट कमांडेंट हरेन्द्र कुमार, संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य, दिल्ली विवि की पूर्व सचिव अंजलि राणा, शिक्षक नेता ठा. यशवीर सिंह राघव ने दीप जलाकर किया। यहां शहीद इंस्पेक्टर सुबोध कुमार सिंह की वीरांगना व जवानों को सम्मानित किया गया। इस दौरान डॉ. अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि जवानों की शहादत का कोई मूल्य नहीं है वो हमेशा अमर रहेंगे। बीएसएफ व सीआईएसएफ अधिकारियों के अलावा अन्य अतिथियों ने भी कार्यक्रम संबोधित किया। कार्यक्रम आयोजक हिमांजलि फाउंडेशन के पदाधिकारियों ने अतिथियों का शॉल व स्मृति चिह्न भेंटकर सम्मान किया। इसमें सीआईएसएफ इंस्पेक्टर राजीव कुमार, दुर्गा, कुलदीप राणा, युवा कवि रितेश गौतम, फाउंडेशन के मीडिया प्रभारी दिनेश तरकर, सौरभ सिसोदिया, हिमांशु राणा, बिहारी सिंह आदि मौजूद रहे।

THE SEA EXPRESS आगरा, गुरुवार, 30 जनवरी 2020

योग को बनाएं अपने जीवन का अहम हिस्साः डॉ.अर्चना प्रिय

कार्यक्रम

- जिला स्तरीय योग प्रतियोगिता में बच्चों ने दिखाई अपनी प्रतिभा

वृन्दावन। पतंजलि योगपीठ के युवा संगठन युवा भारत द्वारा गुरुकुल विश्वविद्यालय में जिला स्तरीय योग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। स्पर्धा का शुभारंभ करते हुए मुख्य अतिथि संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य ने विद्यार्थियों से तन और मन को स्वस्थ रखने के लिए योग को दैनिक जीवन में भी अपनाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि योग को अपने जीवन का अहम हिस्सा बनाएं। योग सिर्फ एक्सरसाइज का एक सेट नहीं है बल्कि यह फिटनेस और वेलनेस पाने का सबसे आसान तरीका भी है।

स्पर्धा में जनपद से 65 विद्यार्थियों ने भाग लिया, जिसमें दो कक्षा छठी से आठवीं के बाल वर्ग में वैभव शर्मा और बालिका वर्ग में देवांशी द्विवेदी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। वहीं कक्षा 9 से 10वीं के बाल वर्ग में मृदुल तथा बालिका वर्ग में शीतल ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। दोनों वर्गों में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को मुख्य अतिथि डॉ. आर्य द्वारा प्रमाण पत्र व पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। युवा भारत के जिला प्रभारी तीर्थराज आर्य ने बताया कि दोनों वर्गों में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को राज्य स्तरीय योग प्रतियोगिता में भेजा जाएगा। इस मौके पर भारत स्वाभिमान के जिला प्रभारी डॉ. अमर सिंह पोनियां, गिर्राज प्रसाद वशिष्ठ, गोपाल दीक्षित, कैलाश द्विवेदी, रामबिहारी आर्य, कपिल प्रताप सिंह, श्यामलता अग्रवाल, रुचि द्विवेदी, सरोज यति सहित अन्य मौजूद रहे।

संस्कार जागृति मिशन

!! ओ३म् !!

''संस्काराद् द्विज उच्यते''
(संस्कारों से परिष्कृत मनुष्य ही द्विज कहलाते हैं)

संस्कार जागृति मिशन

एक कदम संस्कारों की ओर

'संस्कार जागृति मिशन' एक ऐसा प्रयास है जो भारतीय संस्कृति व संस्कारों को पुन: जागृत करने में अहम भूमिका निभा रहा है।

घरों में यज्ञ व बच्चों के संस्कार करायें

बच्चों के जन्मदिन, बुजर्गों की पुण्यतिथि व त्यौहारों पर अपने घरों पर दुनिया का सर्वश्रेष्ठ कर्म 'यज्ञ' करायें तथा अपने बच्चों के सभी संस्कार करा कर उन्हें संस्कारवान बनायें।

वैदिक रीति से संस्कार व यज्ञ करवाने के लिए सम्पर्क करें

सम्पर्क सूत्र : 09719910557, 09719601088, 09058860992, 08218692727

ई-मेल : sanskarjagratimission@gmail.com

SanskarJagratiMission

Sanskar Jagrati TV

धार्मिक खबर, भजन, प्रवचन, योग, संस्कार समागम तथा संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां देखने को YouTube पर संस्कार जागृति टीवी चेनल को सबस्क्राइब करें।